

कर्मकांडी वि. (तत्.) 1. कर्मकांडकर्ता 2. पुं. पुरोहित, कर्मकांड करने में निपुण व्यक्ति।

कर्मकार पुं. (तत्.) 1. मजदूर 2. कारीगर, लुहार, बढ़ई।

कर्मकारक पुं. (तत्.) कारकों का एक भेद, वह पद जो क्रिया के फल के आश्रय के स्वरूप में प्रयुक्त होता है।

कर्मक्षय पुं. (तत्.) किए हुए कर्मों का नाश।

कर्मक्षेत्र पुं. (तत्.) कर्मभूमि, कार्यक्षेत्र।

कर्मग्रंथि स्त्री. (तत्.) कर्मों की वह गाँठ या बंधन जो अज्ञातपरक वासना दोष से उत्पन्न होता है तथा वही जो बारंबार जन्म-मरण का कारण बनता है।

कर्मचांडाल पुं. (तत्.) अपने कुकर्मों या नीच कर्मों के कारण चांडाल के समान माना गया या माना जाने योग्य व्यक्ति, कृतघ्न, कपटी, चुगलखोर, परनिंदक, अत्यंत क्रोधी व क्रूर व्यक्ति।

कर्मचारी पुं. (तत्.) नियमित वेतन या मजदूरी पर किसी काम पर तैनात (नियुक्त) व्यक्ति।

कर्मचारी-वर्ग पुं. (तत्.) किसी प्रकार की संस्था या कारखाने आदि में काम करने वाले कर्मचारियों का समूह।

कर्मज वि. (तत्.) कर्म से पैदा या उत्पन्न पुं. कर्म-फल।

कर्मठ वि. (तत्.) 1. जो कार्य को निष्ठापूर्वक करता हो 2. कर्म में तत्पर, कर्मशील, कर्मनिष्ठ, कर्मण्य 3. कर्म-कुशल, कार्यकुशल।

कर्मठता स्त्री. (तत्.) कर्मण्य या कर्मठ होने की प्रवृत्ति, कर्मण्यता, कर्मशीलता, कार्यकुशलता।

कर्मणा क्रि.वि. (तत्.) कर्म से, कर्म द्वारा जैसे-मनसा, वाचा कर्मणा, मन, वचन और कर्म से।

कर्मणि पुं. (तत्.) 1. कर्म में 2. कर्मानुसार।

कर्मणि प्रयोग पुं. (तत्.) दे. कर्मप्रधान वाक्य।

कर्मण्य वि. (तत्.) क्रियाशील, काम करने में भरोसा रखने वाला विनो. अकर्मण्य।

कर्मण्यता स्त्री. (तत्.) कर्मठता, क्रियाशीलता, काम करने की ललक, प्रवृत्ति विनो. अकर्मण्यता।

कर्मतः क्रि.वि. (तत्.) कर्म से, कर्म द्वारा, कर्मणा।

कर्मधारय समास पुं. (तत्.) समास का एक भेद जिसमें प्रथम तथा द्वितीय पद क्रमशः विशेषण और विशेष्य होते हैं या उपमेय और उपमान होते हैं उदा. 'नीलमणि', 'चंद्रमुख'।

कर्मना क्रि.वि. (तद्-तत्-कर्मणा) कर्म से, कर्म द्वारा। उदा. 'मनसा, वाचा कर्मना, कबीर सुमिरन सार' -कबीर (साखी 2/4)।

कर्मनिष्ठ वि. (तत्.) 1. कर्मशील, कर्म करने में तत्पर, निष्ठापूर्वक काम करने वाला 2. श्रद्धापूर्वक धर्मशास्त्र सम्मत कर्मकांड को करने वाला।

कर्म-पाक पुं. (तत्.) पूर्वकृत कर्मों का परिणाम, किए गए कर्मों का फल।

कर्मप्रधान वि. (तत्.) कर्म की प्रमुखता या प्रधानता वाला/से संबंधित, भौतिक पदार्थों, कार्यों तथा अनुभूतियों से संबंधित उदा. कर्म प्रधान विश्वकरि राखा। जो जस करइ सो तस फलु चाखा। (रामच. 2/219/2)।

कर्मप्रधान क्रिया स्त्री. (तत्.) (व्या.) लिंग और वचन में कर्म का अनुसरण करती हुई कर्मवाच्य की क्रिया।

कर्मप्रधान वाक्य पुं. (तत्.) (व्या.) वह वाक्य जिसमें क्रिया का लिंग, वचन निर्धारण कर्म के अनुसार हो, वाक्य में कर्म की प्रधानता हो।

कर्म-फल पुं. (तत्.) 1. किए हुए कर्म या कर्मों का परिणाम 2. पिछले जन्मों या इस जन्म में किए हुए कर्मों का फल या परिणाम।

कर्मबंध पुं. (तत्.) पहले या इस जन्म में किए गए कर्मों के परिणामस्वरूप होते रहने वाला 2. जन्म-मरण का बंधन।